नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पीओके ; पाकिस्तान को जवाबदेह ठहराने का समय

पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) से सामने आ रही घटनाएं एक बार फिर यह साबित कर रही हैं कि इस क्षेत्र पर इस्लामाबाद का नियंत्रण केवल सैन्य शक्ति, भय और दमन के बल पर कायम है. रावलाकोट, पुंछ और अन्य क्षेत्रों में प्रदर्शनकारियों पर गोलीबारी, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी, इंटरनेट बंदी और राजनीतिक असहमति को आतंकवाद के नाम पर कुचलने की कार्रवाई न केवल लोकतांत्रिक मूल्यों का अपमान है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय कानून और मानवाधिकारों का भी खुला उल्लंघन है.

भारत के विदेश मंत्रालय ने इस मुद्दे पर जो कड़ा रुख अपनाया है, वह परिस्थितियों के अनुरूप और आवश्यक है. विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने जिस स्पष्टता के साथ पाकिस्तान की पुलिस क्रूरता और बर्बरता की निंदा की है, वह केवल एक कूटनीतिक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि उन हजारों लोगों की आवाज है जिन्हें वर्षों से अपने ही अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है.

पीओके में वर्तमान अशांति किसी बाहरी हस्तक्षेप का परिणाम नहीं है. यह वहां के लोगों के भीतर वर्षों से जमा असंतोष का विस्फोट है. विधानसभा में 12 तथाकथित 'शरणार्थी सीटों' को लेकर स्थानीय जनता का विरोध इस बात का प्रमाण है कि पाकिस्तान वहां की राजनीतिक व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए लोकतांत्रिक प्रक्रिया का दुरुपयोग कर रहा है. जिन लोगों का क्षेत्र से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है, उनके माध्यम से सत्ता संरचना को प्रभावित करना जनता की राजनीतिक इच्छा का अपमान है.

इसके साथ ही महंगाई, बिजली संकट और आर्थिक उपेक्षा ने हालात को और विस्फोटक बना दिया है. विडंबना यह है कि जिस क्षेत्र से पाकिस्तान को बड़ी मात्रा में पनबिजली प्राप्त होती है, वहीं के नागरिकों को महंगी बिजली और बुनियादी सुविधाओं के अभाव का सामना करना पड़ रहा है. यह संसाधनों के शोषण और जनता की उपेक्षा का स्पष्ट उदाहरण है.

सबसे गंभीर प्रश्न मानवाधिकारों का है. शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाना, विरोध करने वाले संगठनों को आतंकवाद विरोधी कानूनों के तहत प्रतिबंधित करना, इंटरनेट सेवाएं बंद करना और मीडिया पर नियंत्रण स्थापित करना संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार घोषणापत्र की मूल भावना के विपरीत है. पाकिस्तान अक्सर विश्व मंचों पर मानवाधिकारों की बात करता है, लेकिन पीओके में उसका व्यवहार उसकी दोहरी नीति को उजागर कर देता है.

भारत ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से पाकिस्तान को जवाबदेह ठहराने की जो मांग की है, वह पूरी तरह उचित है. यदि दुनिया वास्तव में मानवाधिकारों और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध है, तो उसे पीओके में हो रहे अत्याचारों पर भी उतनी ही गंभीरता दिखानी चाहिए जितनी वह अन्य क्षेत्रों के मामलों में दिखाती है. चयनात्मक संवेदनशीलता वैश्विक संस्थाओं की विश्वसनीयता को कमजोर करती है. सच्चाई यह है कि पीओके में उभर रहा जनाक्रोश पाकिस्तान की प्रशासनिक विफलता और राजनीतिक दमन का प्रत्यक्ष परिणाम है. गोली, गिरफ्तारी और सेंसरशिप के बल पर जनता की आकांक्षाओं को लंबे समय तक दबाया नहीं जा सकता.

भारत का यह स्थायी और स्पष्ट रुख सही है कि पूरा जम्मू-कश्मीर और लद्दाख उसका अभिन्न हिस्सा है तथा पीओके पर पाकिस्तान का कब्जा अवैध है. अब समय आ गया है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय भी इस सच्चाई को स्वीकार करे और पीओके की जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए पाकिस्तान पर ठोस दबाव बनाए.

मोदी युग ने भारत को नए सिरे से परिभाषित किया

पीयूष गोयल

वर्ष 2014 के बाद से, भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है. इसकी अर्थव्यवस्था कहीं अधिक मजबूत हुई है. बुनियादी ढांचा निश्चित रूप से बेहतर हुआ है. महिलाएं बेहद सशक्त हुई हैं. किसानों को बेहतर दाम मिल रहे हैं और गरीब अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित हुए हैं. इन तमाम बदलावों में एक ही बात साझा है- प्रधानमंत्री मोदी की दूरदृष्टि और उनका नेतृत्व.

भारत के लोगों ने उनके दूरदर्शी एवं संवेदनशील नेतृत्व का भरपूर समर्थन किया है और उन्हें देश का सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाला निर्वाचित प्रधानमंत्री बनाया है. बीते 10 जून को उन्होंने राष्ट्र की सेवा में 4,399 दिन पूरे किए और अपनी पहली चुनावी जीत के बाद जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ते हुए आगे निकल गए.

यह ऐतिहासिक उपलब्धि भारत की लोकतांत्रिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ है. देश के लोगों ने ऐसे समय में 2014 में मोदी सरकार को भारी बहुमत से सत्ता सौंपी, जब अर्थव्यवस्था लड़खड़ा रही थी और यूपीए सरकार के बदनाम कार्यकाल के दौरान नीतिगत गतिरोध, भ्रष्टाचार, घोटालों एवं विवादों को लेकर जनता में निराशा लगातार बढ़ रही थी.

आधुनिक बुनियादी ढांचा

मोदी सरकार देश के बुनियादी ढांचे में तेजी से बदलाव ला रही है. सक्रिय हवाई अड्डों की संख्या दोगुनी से अधिक हो गई है. वर्ष 2014 में सक्रिय हवाई अड्डों की संख्या 74 थी और अब यह 160 से अधिक हो गई है .बड़े पैमाने पर रेलवे के विद्युतीकरण, महत्वाकांक्षी बुलेट ट्रेन परियोजना और राष्ट्रीय राजमार्गों व एक्सप्रेसवे के तेज विस्तार ने देश के कई हिस्सों के बुनियादी ढांचे को दुनिया के बेहतरीन बुनियादी ढांचों की बराबरी में ला खड़ा किया है .प्रधानमंत्री की इस ऐतिहासिक उपलब्धि का वास्तविक महत्व कार्यकाल के दिनों की गिनती में नहीं, बल्कि किए गए व्यापक बदलावों में निहित है. उनके दूरदर्शी नेतृत्व ने गरीबों एवं किसानों के कल्याण, मध्यम वर्ग की आकांक्षाओं और उभरते भारत की महत्वाकांक्षाओं को शासन के केन्द्र में रखा है. अब जबकि देश प्रगति के पथ पर अग्रसर है, 2047 तक 'विकसित भारत' के निर्माण के नए संकल्प के साथ बदलाव की यह यात्रा निरंतर जारी रहेगी.

संवेदनशील नेतृत्व- 2014 से देश निरंतर बदलाव की यात्रा पर है. मोदी सरकार ने 81 करोड़ से अधिक लोगों के लिए मुफ्त अनाज की व्यवस्था की, 58 करोड़ जनधन बैंक खातों के जरिए वित्तीय समावेशन को संभव बनाया और 16 करोड़ घरों तक नल के पानी का कनेक्शन पहुंचाया. दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना, 'आयुष्मान भारत' के जरिए 12 करोड़ परिवारों को 5 लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज की गारंटी मिल रही है.

कई युवा भारतीयों के लिए यह कल्पना करना मुश्किल हो सकता है कि मोदीजी द्वारा - पहले गुजरात के मुख्यमंत्री और बाद में प्रधानमंत्री के रूप में - लाए गए बड़े बदलावों से पहले जीवन कितना चुनौतीपूर्ण था. उनके निर्णायक नेतृत्व और नेक एवं संवेदनशील दृष्टिकोण ने देश को 'विकसित भारत 2047' मिशन की दिशा में आगे बढ़ाया है. इस मिशन में भारत की विरासत पर गर्व और विकास का एक महत्वाकांक्षी एजेंडा शामिल है.

नारी शक्ति- प्रधानमंत्री के लिए महिलाएं केवल सहायता की लाभार्थी नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माता हैं. सबसे पहले उनकी बुनियादी जरूरतों पर ध्यान दिया गया- स्वच्छ भारत मिशन के तहत 12 करोड़ से अधिक शौचालय बनाए गए. इससे उनकी सुरक्षा और सम्मान में वृद्धि हुई. वहीं, उज्ज्वला योजना के तहत 10 करोड़ से अधिक मुफ्त एलपीजी कनेक्शन दिए गए. इससे महिलाओं को धुएं से भरी रसोई के खतरों से मुक्ति मिली.

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' की पहल ने बेटियों की शिक्षा एवं उनके कल्याण के महत्व को और ठोस बनाया है. 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' के जरिए, प्रधानमंत्री ने महिलाओं के नेतृत्व में विकास को आगे बढ़ाने के लिए देश की विधायिकाओं में महिलाओं की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित की है.

किसानों का कल्याण- किसानों का कल्याण प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों का एक मुख्य आधार रहा है. किसानों के योगदान को मान्यता देते हुए, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) के जरिए उन्हें सीधे आय संबंधी सहायता प्रदान की जाती है. इस योजना के तहत बांटे गए कुल 4.28 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि से लगभग 10 करोड़ किसान परिवारों को लाभ हुआ है.

सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में भी काफी बढ़ोतरी की है, जो अब उत्पादन लागत का कम से कम 1.5 गुना है. साथ ही, किफायती दरों पर फसलों के लिए पोषक तत्व उपलब्ध कराकर किसानों को वैश्विक स्तर पर उर्वरकों की कीमतों में हुई भारी बढ़ोतरी से बचाया गया है.

युवाओं के लिए अवसर- युवा भारतीयों के लिए अवसर सृजित करने के उद्देश्य से, 'मेक इन इंडिया' और 'स्टार्टअप इंडिया' जैसी प्रमुख पहलें शुरू की गई हैं. 'कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय' के रूप में एक समर्पित मंत्रालय के गठन से जहां युवाओं को आधुनिक अर्थव्यवस्था के अनुकूल कौशल से लैस करने में मदद मिली है, वहीं भारत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के क्षेत्र में उभरती हुई क्रांति का लाभ उठाने के लिए तैयार भी किया गया है. 'स्टार्टअप इंडिया' और नवाचार को दिए गए व्यापक समर्थन ने कई युवाओं को नौकरी खोजने वाला से हटकर नौकरी देने वाला बनने में मदद की है.

(लेखक केन्द्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री हैं)

ग्वालियर चंबल डायरी

प्राधिकरणों में कार्य विभाजन बना चुनौती, छत्रपों की ले रहे शरण

हरीश दुबे

ग्वालियर के तीनों प्राधिकरणों में अब नया निजाम है. मेला प्राधिकरण में नरेंद्र सिंह के समर्थक अशोक जादौन, साडा में सिंधिया के करीबी अशोक शर्मा तो जीडीए में सीधे संघ से जुड़े मधुसूदन भदौरिया अध्यक्षी संभाल रहे हैं. चूंकि तीनों प्राधिकरण स्वायत्तशासी हैं, लिहाजा इनके अध्यक्ष भी फ्रीहैंड हैं. नई नियुक्तियों के बाद इन प्राधिकरणों के कामकाज में फिलहाल तो कोई बाधा नहीं दिखती लेकिन भविष्य की अड़चन इन अध्यक्षों के साथ ही नियुक्त किए गए उपाध्यक्षों के कार्य विभाजन के दौरान आ सकती है. जीडीए में दो और साडा व मेला प्राधिकरण में एक एक उपाध्यक्ष नियुक्त हुए हैं. ये सभी चार उपाध्यक्ष प्राधिकरण में महत्वपूर्ण कॉलोनियों से लेकर सीधे जनता व व्यापारियों से जुड़ाव वाली रसूखदार जिम्मेदारियां चाहते हैं. चूंकि अध्यक्षों के साथ ही उपाध्यक्ष भी सत्तारूढ़ दल के अलग अलग क्षत्रपों से ताकत हासिल करते हैं, लिहाजा कार्य विभाजन में ज्यादा से ज्यादा वजन हासिल करने की कवायद के लिए दिल्ली भोपाल तक दौड़ चल रही है. इधर, अशोक जादौन दिसंबर से शुरू होने वाले ग्वालियर व्यापार मेला की तैयारी में जुटे हैं तो मधुसूदन इस दीवाली तक शहर को बड़ी आवासीय योजना देना चाहते हैं जबकि अशोक शर्मा के समक्ष चुनौती साडा को हाशिए से उठाकर मुख्य धारा में लाने की है.

मीनाक्षी के साथ खड़ी नजर आई चंबल की पूरी कांग्रेस

मीनाक्षी नटराजन एक दौर में जब एनएसयूआई की राष्ट्रीय अध्यक्ष, युवक कांग्रेस की प्रदेश अध्यक्ष और नेहरू युवा केंद्र की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जैसे बड़े राजनीतिक रसूख वाले ओहदे संभाल रही थीं, तभी से ग्वालियर चंबल अंचल से उनका भावनात्मक लगाव रहा है. उन्होंने यहां के कई नेताओं को अपनी टैलेंट दिखाने के लिए प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराकर उन्हें राष्ट्रीय पहचान दिलाई. यही वजह है कि राज्यसभा की तीसरी सीट के लिए कांग्रेस ने जब उन्हें अपना प्रत्याशी घोषित किया तो इस अंचल में खूब जश्न मना और जब उनका नामांकन रद्द हुआ तो उनके गृहक्षेत्र मंदसौर रतलाम के बाद जिस इलाके के कांग्रेसजन सर्वाधिक गम में डूबे हैं तो वह ग्वालियर चंबल क्षेत्र है. मीनाक्षी का नामांकन रद्द होने के विरोध में आज चंबल अंचल के हरेक शहर में हुए विरोध प्रदर्शनों में जिस तरह जिस तरह कार्यकर्ताओं की भीड़ उमड़ी और आक्रोष छलका, उससे जाहिर है कि उन्हें भले ही पार्टी में भीड़ जुटाने वाली नेता न माना जाता रहा हो लेकिन सांगठनिक स्तर पर उनका कोई शानी नहीं है. जब ग्वालियर में एनएसयूआई और युकां में पदाधिकारी ऊपर से थोपने के बजाए पहली बार चुनाव के जरिए चयन की परिपाटी शुरू हुई तो उन्होंने इसकी सीधी मॉनिटरिंग की थी. चंबल में उनके मुरीदों को फिलहाल दिल्ली से आने वाले चुनाव आयोग के अगले आदेश का इंतजार है.

मंत्री के साथ मंच साझा कर मुसीबत में पार्षदपति आसिफ अली

कांग्रेस नेता और पार्षदपति आसिफ अली खान को प्रदेश के ऊर्जा मंत्री के साथ मंच साझा करना महंगा पड़ गया है. जनप्रतिनिधि के नाते ऊर्जा मंत्री के साथ उनके मंच पर बैठने में कांग्रेस अनुशासन समिति को ज्यादा एतराज नहीं है लेकिन इल्जाम यह है कि जब मंत्री महोदय मंच से कांग्रेस पर एक के बाद एक हमले कर रहे थे, तब आसिफ अली चुप्पी लगाकर बैठ गए. इससे पहले भी आसिफ अली कांग्रेस संगठन में पदों के बंटवारे में अल्पसंख्यकों को हाशिए पर रखे जाने का इल्जाम लगाकर किसी तरह बच निकले थे लेकिन इस बार अनुशासन समिति उनके प्रति कुछ ज्यादा ही तल्ख है. उन्हें नोटिस थमा दिया गया है, जिसका जवाब आसिफ ने यह कहते हुए दिया है कि उन्होंने तत्काल ही एक प्रेस रिलीज जारी कर ऊर्जा मंत्री के इल्जामों पर नाराजगी के साथ नाइत्तफाकी जता दी थी. बहरहाल, कांग्रेस में उनके भविष्य को लेकर फैसला अनुशासन समिति ने होल्ड पर रखा है.

निकाय चुनाव से पहले महिला मोर्चा में पूरे घर के बदले

अंततः करुणा सक्सेना भाजपा महिला मोर्चा की जिलाध्यक्षी पाने में कामयाब रहीं हैं. डॉक्टरेट की डिग्रीधारी करुणा को स्थानीय पार्टी संगठन में सर्वाधिक पढ़ी लिखी महिला नेत्रियों में शुमार किया जाता है. वे अभी तक जिला महामंत्री थीं और अब उन्हें प्रमोशन मिला है. हालांकि एक और जिला महामंत्री किरणलता भदौरिया भी स्पर्धा में थीं. ममता भिलवार का भी नाम भी चल रहा था लेकिन लॉटरी करुणा सक्सैना के नाम की खुली. अभी तक नीलिमा शिन्दे जिलाध्यक्ष पद संभाल रही थीं. पार्टी निवर्तमान पदाधिकारियों नीलिमा और किरणलता को संगठन में अन्य कहीं एडजस्ट कर सकती है. खास बात यह कि नई अध्यक्ष करुणा सक्सेना और पुरानी अध्यक्ष नीलिमा ने अपना राजनीतिक कैरियर ग्वालियर निगम में पार्षदी से शुरू किया था और बाद में महिला मोर्चा में जिला नेतृत्व तक पहुंचीं. सिर्फ ग्वालियर ही नहीं बल्कि अंचल के मुरैना, शिवपुरी, श्योपुर और अशोकनगर में भी महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष बदल दी गई हैं. चूंकि निकाय चुनाव नजदीक हैं और टिकट वितरण में महिला मोर्चा की अनुशंसा भी मायने रखती है, लिहाजा इन नियुक्तियों को महत्वपूर्ण माना जा रहा है.

जजों के लिए एआई सिर्फ सहायक उपकरण

सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में अदालतों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के इस्तेमाल के संदर्भ में मसौदा जारी किया, जो इसे सहायक उपकरण के रूप में स्वीकृति देता है. परंतु जहां तक निर्णय लेने की बात है, एआई कभी भी जजों का स्थान नहीं ले सकती. इसकी वजह यह है कि एआई सिस्टम पूर्वाग्रहयुक्त हो सकती है तथा उसमें पारदर्शिता का अभाव रहता है. इसलिए इसे न्यायिक सुरक्षा उपायों के साथ संतुलित रखना होगा. चीन में छोटे-मोटे जुर्माने जैसे सीमित मामलों में एआई का प्रयोग किया गया, लेकिन अधिकार व न्याय जैसे जटिल मामलों में एआई अनुपयुक्त हैं तथा उसका इस सिलसिले में परीक्षण भी नहीं किया गया. सुप्रीम कोर्ट की समिति ने अदालतों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल के लिए 'नियमन' मसौदा सार्वजनिक विमर्श के लिए जारी किया. संबंधित लोगों से 20 जून तक इस बारे में राय आमंत्रित की गई है. प्रस्तावित नियमन में साफ-साफ कहा गया है कि एआई सिस्टम पूरी तरह मानव के निर्णय व न्यायिक अधिकारी के अधीन रहेंगे तथा केवल सहायक की हैसियत से काम करेंगे. कानून व न्याय के मामलों में केवल न्यायिक अधिकारी ही निर्णय लेंगे. मसौदे के ढांचे में अदालतों को सक्रिय रूप से एआई टूल्स का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है. इसका उद्देश्य विलंब को कम करना, प्रशासकीय क्षमता बढ़ाना तथा न्याय हासिल करने की प्रक्रिया में सुधार लाना है. इसके बावजूद किसी विवाद के नतीजे को लेकर भविष्यवाणी करने या मानवीय निर्णय क्षमता का पर्याय बनने की एआई को मनाही होगी. मसौदे के नियमन में एआई का इस्तेमाल कानूनी अनुसंधान, पुरानी मिसाल खोज निकालने, दस्तावेजों का संक्षिप्तीकरण करने, अनुवाद करने, मामलों का प्रबंधन करने, बैकलाग पर निगरानी रखने आदि के लिए किया जाएगा. इन सारे कार्यों पर मानव की निगाह व जांच-पड़ताल बनी रहेगी.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मुफ्तखोरी का मामला संगीन, पुरुष बन गए लाडकी बहीण

पड़ोसी ने हमसे कहा, प 'निशानेबाज, महाराष्ट्र में 14,000 पुरुषों ने खुद को महिला बताकर 'लाडकी बहीण' योजना का लाभ उठाया. यह कितना गलत काम है!' हमने कहा, 'जब विधानसभा चुनाव के समय इस लोकलुभावन योजना की घोषणा की गई, तो बहती गंगा में कितने ही लोगों ने हाथ धो लिए. सरकार ने दिया और लोगों ने लिया. वोट और नोट का आदान-प्रदान लोकतंत्र की पहचान बन गया है. जब तक वेरिफिकेशन नहीं होता, तब तक मुफ्त का माल समेटने की प्रवृत्ति बनी रहती है. इसे कहते हैं मुफ्त का चंदन, घिस मेरे नंदन !'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इन पुरुषों को लज्जा नहीं आई कि खुद को स्त्री बताकर योजना का लाभ उठा लिया. क्या उन्हें अपनी मर्दानगी का एहसास नहीं हुआ? पुरुषत्व इसमें है कि खुद मेहनत करके पैसा कमाओ.' हमने कहा, 'कितने ही लोग मौके की ताक में रहते हैं. जो फुकट में मिल जाए उसे तुरंत हजम कर लो. इसे कहते हैं मौकापरस्ती या अवसरवाद ! हो सकता है किसी का नाम कमल, विमल, किरण होगा. ऐसे नाम महिला व पुरुष दोनों के हो सकते हैं. आपको मालूम है कि पंजाब में सुरिंदर, राजिंदर, सुखविंदर, सतिंदर जैसे नाम होते हैं.

उनमें सिंह लगा तो पुरुष और कौर लगा दो तो महिला!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हम पंजाब की नहीं, महाराष्ट्र की बात कर रहे हैं. चुनावी वादा पूरा करने के लिए फडणवीस सरकार ने लाडकी बहीण योजना की रकम जारी करते हुए लोगों का वेरिफिकेशन नहीं किया. प्रशासन ने यह भी नहीं देखा कि जिस बैंक खाते में रकम जमा की जा रही है, वह मर्द का है या औरत का?'

हमने कहा, 'मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे भी मामले पाए हैं कि शरीर पुरुष का रहने पर भी कुछ लोगों में स्त्री जैसी सोच रहती है. उनका मन महिला का रहता है. यह हारमोन्स की गड़बड़ी से होता है. इस टाइप के लोगों को मराठी में बाईमाणुस कहते हैं. इन लोगों ने इस योजना का लाभ उठाया होगा.' हमने कहा, 'ऐसा कुछ भी नहीं है. सरकारी नौकरी करने वाली, फोर व्हीलर रखने वाली, इनकम टैक्स देने वाली महिलाओं ने भी तो लाडकी बहीण योजना का लाभ उठाया. अब केवायसी मांगा गया है और अपात्रों के नाम काट दिए जाएंगे. वैसे अब तक हजम किया हुआ पैसा वापस निकाल पाना शायद ही संभव है!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12285 - डॉ. सागर खादीवाला

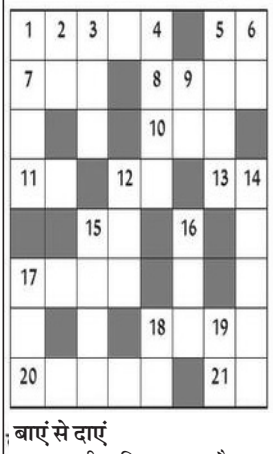

बाएं से दाएं
1. तसल्ली, इत्मिनान 5. औषध 7. असभ्य, मूर्ख 8. भय, खौफ 10. मीठे कंद का एक पौधा 11. सुंदर, मनोरम 12. मार्ग, रास्ता 13. जल से रहित भूमि 15. सजावट, शोभा, सुंदरता 17. किसी देश के राजा या शासक की माता 18. पानी प्राप्त करने के लिए जमीन में गहराई तक पहुंचाया हुआ नल, ट्यूबवेल 20. सरकार की ओर से दिया हुआ वह दंड जिसमें दंडित व्यक्ति किसी सुरक्षित स्थान पर रखा जाता है, नजर बंद होने की दशा 21. जांघ, जंघा

ऊपर से नीचे
1. दो दिशाओं की बीच की दिशा, कोण के दिन सामूहिक रूप से नमाज पढ़ने का स्थान 5. अयोध्या के राजा और श्रीराम के पिता 6. वैद्यक के अनुसार शरीर की 2. अन्न का दाना जो भूनने से फूल गया हो, तीतर की जाति का एक पक्षी 3. धान के बीज जिसमें अंकुर फूटे हों 4. ईद वह वायु जिसके विकार से रोग उत्पन्न होते हैं 9. मुसलमानों की मक्का की पवित्र तीर्थ यात्रा 12. राजा का पद, भाव या काम 14. बाल्यावस्था, चंचलता 15. खबर, संवाद, हल 16. विक्षिप्त 17. नियंत्रित मूल्य पर खाने-पीने की सामग्री मिलने की व्यवस्था 18. सरिता, दरिया 19. कूड़ा, ढेर

Solution 12284

अ	व	लं	बि	त		त	थ्य
स्वा	द		ट	क	सा	ल	
भा	न	जा			र	वा	ना
वि		म	हा	सा	ग	र	
क	जा		ज		र्भि		का
	फ	र	मा		त	ब	ला
	रा	ह		दी		ल	व
आ	न	न	फा	न	न		धि

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में चिन्ताओं से छुटकारा मिलेगा, राज्य सम्मान की प्राप्ति होगी, गृहकार्य में व्यस्तता रहेगी, धन लाभ का योग है, मन में प्रसन्नता रहेगी, वर्ष के मध्य में यात्रा का योग है, व्यय में कमी तथा व्यापार में सुधार होगा, रोजगार में सफलता मिलेगी, भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा, वर्ष के अन्त में व्यवहारकुशलता बढेगी, मित्र के कारण कार्यो में व्यवधान आयेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों से राजनैतिक लाभ होगा, घरेलू कार्यो में व्यस्तता रहेगी, धन लाभ का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यय में कमी तथा व्यापार में उहापोह की स्थिति निर्मित होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक मिलनसार, न्यायप्रिय, परोपकारी, तथा अच्छी शिक्षा प्राप्त करेगा, अध्ययन लेखन के कार्यो में रूचि रहेगी, ऐसा जातक इंजीनियरिंग, वायुयान संबंधी तकनीकी के कार्यो में सफल होते है.

मेष- अधिकारी कार्यशैली से नाराज हो सकते हैं, समय देखकर कार्य करना अच्छा रहेगा, नवीन योजनाओं का क्रियान्वयन होगा, कामकाज में सफलता मिलेगी.

वृषभ- नई योजनाओंसे खर्च पर अच्छा लाभ होगा, अधिकारियों से बना कर चलें, राज सम्मान एवं यश कीर्ति में वृद्धि होगी, शुभ संदेश मिलेगा.

मिथुन- भावनात्मक संबंधों में गतिरोध बना रहेगा, राजकीय मामलों में पक्ष मजबूत होगा, शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी, मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

कर्क- कानूनी मामले मिलबैठकर सुलझा लेंगे, व्यापारिक संबंधों में स्थितरता रहेगी, अज्ञातभय, से चिन्ता रहेगी, पूजा पाठ धर्मकर्म में रूचि रहेगी.

सिंह- मनमौजी रवैया तरक्की में बाधक हो सकता है,बेचारिक मतभेद दूर होंगे, पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी, व्यापार व्यवसाय में काम की अधिकता रहेगी.

कन्या- नए संपर्कों का लाभ मिलेगा, प्रेम संबंधों में अड़चनें आने से अशांति होगी, व्यापार में अनुकूलता रहेगी, निजी कार्यो में व्यस्तता रहेगी.

तुला- अपनी बात को प्रभावी ढंग से रखने में सफल होंगे, प्रियजनों से विरोध होगा, संयम से कार्य करना हितकर रहेगा, जल्दबाजी में कोई भी निर्णय न करें.

वृश्चिक- निजी कार्यो को पूरा करने में किसी की मदद लेना पड़ेगी, पारिवारिक क्लेश एवं चिन्ता रह सकती है, संतान संबंधी कार्यो में विलंब होगा, शांति से काम लें.

धनु- वैभवविलासिता के कार्यो में खर्च होगा, अप्रत्याशित लाभ होने से हर्ष रहेगा, मान सम्मान मिलेगा, नियोजित कार्यो कीरूपरेखा पर विचार होगा.

मकर- आलोचना करने से बचें, घरेलू मामलों को लेकर चिन्ता होगी, शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी, धार्मिक कार्य बनेंगे, स्वजनों का सहयोग मिलेगा.

कुम्भ- पारिवारिक माहौल मेंसामंजस्य बना रहेगा, व्यापार की नई योजना बनेगी, प्रियजनों का सहयोग मिलेगा, महत्वपूर्ण कामकाज बनेगा.

मीन- नई योजना की शुरूआत में सफलता मिलेगी, खोई प्रतिष्ठा हासिल कर लेंगे, किये गये प्रयास सार्थक होंगे, निजी पुरूषार्थ बना रहेगा, संयम रखें.

उदयकालीन ग्रह चाल

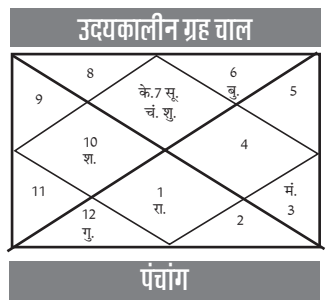

पंचांग

रा.मि. 21 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी गुरूवासरे शाम 5/54, अश्विनी नक्षत्रे रात 2/55, शोभन योगे रात 9/53, वव करणे सू.उ. 5/14, सू.अ. 6/46, चन्द्रचार मेष, पर्व- पुरूषोत्तमी एकादशी व्रत, शु.रा. 1,3,4,7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9,10,12 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से मूंग, ज्वार, बाजरा, आदि के भाव में तेजी होगी, आलू के भाव में उठाव आयेगा, सोने के भाव में समता रहेगी, रूई, सूत, कपास, में घटाबढ़ी की धारणा होगी. भाग्यांक 3578 है.

SUDOKU 7417

8	2			6			1	
	6		8	9			7	5
3			1					2
	3		4				6	
6		2		1		4		3
	8				5		2	
2					3			1
5	1			7	6		4	
	9			4			3	6

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ग पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ग पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7416

8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5